शीघ्र ईश्वरप्राप्ति हेतु 'गुरुकृपायोग' : खण्ड १

गुरुकृपायोगानुसार साधना

निरन्तर गुरुकृपा होने हेतु गुरुकृपायोगानुसार साधना करें !

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

एवं सद्गुरु डॉ. चारुदत्त प्रभाकर पिंगळे

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९९, हिन्दी १९६, गुजराती ६८, तेलुगु ५४, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अगस्त २०२४ तक ३६६ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९७ लाख ३३ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

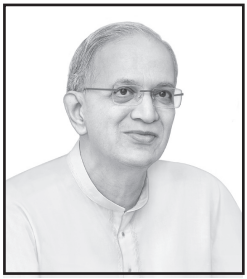

१. अध्यात्मप्रसारार्थ ‘सनातन संस्था’ की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए ‘गुरुकृपायोग’ साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.६.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक ‘सनातन प्रभात’ के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. ‘हिन्दू राष्ट्र’ की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु ‘भारत गौरव पुरस्कार’ देकर फ्रान्स के संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ।।
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ।। – जयंत बाळाजी आठवले
१५.५.१९९८

सद्गुरु डॉ. चारुदत्त पिंगळे, एम.एस. (ई.एन.टी.)

'हिन्दू जनजागृति समिति' के राष्ट्रीय मार्गदर्शक हैं तथा भारत व नेपाल में हिन्दू राष्ट्र-स्थापना हेतु हिन्दू-संगठन कर रहे हैं । आपके नेतृत्व में प्रतिवर्ष गोवा में 'वैश्विक हिन्दू राष्ट्र महोत्सव' आयोजित किया जाता है । आप सनातन के अनेक ग्रन्थों के संकलनकर्ता भी हैं ।

अनुक्रमणिका

अध्याय १ : प्राणीमात्र के जीवन का उद्देश्य, अध्यात्म एवं साधना ११

१ अ. प्राणीमात्र के जीवन का उद्देश्य ११

१ आ. प्रत्यक्ष जीवन, विज्ञान की सीमाएं व अध्यात्म का महत्त्व ११

१ इ. साधना का अर्थ क्या है ? १२

अध्याय २ : गुरु एवं गुरुकृपायोगानुसार साधना १३

२ अ. गुरु १३

२ आ. गुरुकृपायोग १५

२ इ. निरन्तर गुरुकृपा हेतु गुरुकृपायोगानुसार साधना आवश्यक १५

२ ई. गुरुकृपायोगानुसार करनेयोग्य साधना का नियम – 'जितने व्यक्ति उतनी प्रकृतियां, उतने साधनामार्ग' १६

२ उ. गुरुकृपायोगानुसार करनेयोग्य साधना के प्रमुख सिद्धान्त १७

अध्याय ३ : सामान्यतः साधना में सम्भावित मूलभूत चूकें ३७

३ अ. स्वयंनिर्धारित साधना करना ३७

३ आ. साम्प्रदायिकता ३८

३ इ. गुरु 'धारण करना' ३८

३ ई. अपनेआप को साधक समझना ३९

अध्याय ४ : गुरुकृपायोगानुसार साधना के प्रकार ४०

४ अ. व्यष्टि साधना ४०

४ आ. समष्टि साधना ५९

४ इ. व्यष्टि एवं समष्टि साधना ६३

अध्याय ५ : गुरुकृपायोगानुसार साधना के विशेषतायुक्त चरण ६५

५ अ. गुरुकृपायोगानुसार निर्गुण ईश्वर की प्राप्ति होने के चरण ६५

५ आ. गुरुकृपायोगानुसार क्षमता (रुचि-अरुचि) अनुरूप सेवा करवाकर गुरु का साधक को मोक्ष की ओर ले जाना ६५

५ इ. गुरुकृपायोगानुसार साधना के चरण, उनसे सम्बन्धित शक्ति तथा ईश्वरीय गुण, विशेषता एवं प्रक्रिया (प्रभाव) ६७

५ ई. गुरुकृपायोगानुसार साधना के चरण एवं सेवा में व्यष्टि एवं समष्टि साधना का उत्तम समन्वय होना ६७

५ उ. गुरुकृपायोग के अन्तर्गत सेवा से साधकों को अल्प आध्यात्मिक स्तर पर भी जनलोक के योगीजनों को प्राप्त आत्मस्वरूप रिक्ति में स्थित जागृत ध्यानावस्था की स्थिति प्राप्त होना ६९

अध्याय ६ : साम्प्रदायिक साधना एवं गुरुकृपायोगानुसार साधना ७०

अध्याय ७ : गुरुकृपायोगानुसार साधना करने पर होनेवाली अनुभूतियां ७५

टिप्पणी : ग्रन्थ में अनेक स्थानों पर 'प.पू. डॉक्टरजी' ऐसा उल्लेख ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं में से 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी' के सन्दर्भ में है ।

‘गुरुकृपायोगानुसार साधना’ ग्रन्थमाला की भूमिका

जीवन में आनेवाले दुःखों का धैर्यपूर्वक सामना करने की शक्ति एवं सर्वोच्च स्तर का स्थायी आनन्द केवल साधना से ही प्राप्त होता है । साधना अर्थात ईश्वरप्राप्ति हेतु किए जानेवाले प्रयास । ‘साधनानाम् अनेकता’ अर्थात साधना अनेक प्रकार की होती है । निश्चितरूप से कौनसी साधना करनी चाहिए, इस विषय में अनेक लोग निर्णय नहीं कर पाते । उसपर भी प्रत्येक पन्थ एवं सम्प्रदाय कहता है कि हमारा साधनामार्ग सर्वश्रेष्ठ है । इससे उनका भ्रम और भी बढ जाता है । ऐसी स्थिति में निश्चितरूप से साधना कौनसे मार्ग से करनी चाहिए ?

वर्ष १९९४ में एक बार हम अपने सद्गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजी के (बाबा के) साथ इंदौर के आश्रम में थे । उस समय बाबा ने कहा, ‘‘सभी योगों में भक्तियोग श्रेष्ठ है ।’’ उसपर हममें से एक ने (डॉ. जयंत आठवलेजी ने) साहस कर कहा, ‘‘नहीं बाबा, ‘गुरुकृपायोग’ सर्वश्रेष्ठ है !’’ अत्यन्त आनन्द से बाबा बोले, ‘‘बिलकुल ठीक कहा !’’

कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग आदि किसी भी मार्ग से साधना करने पर भी बिना गुरुकृपा के व्यक्ति को ईश्वरप्राप्ति होना असम्भव है । इसीलिए कहा जाता है, ‘गुरुकृपा हि केवलं शिष्यपरममङ्गलम् ।’, अर्थात ‘शिष्य का परममंगल अर्थात मोक्षप्राप्ति, उसे केवल गुरुकृपा से ही हो सकती है ।’ गुरुकृपा के माध्यम से ईश्वरप्राप्ति की दिशामें मार्गक्रमण होने को ही ‘गुरुकृपायोग’ कहते हैं । ‘गुरुकृपायोग’ की विशेषता यह है कि यह सभी साधनामार्गों को समाहित करनेवाला ईश्वरप्राप्ति का सरल मार्ग है ।

यह स्वाभाविक धारणा है कि गुरुकृपा होने के लिए गुरुप्राप्ति होना आवश्यक है; परन्तु यहां ध्यान देनेयोग्य महत्त्वपूर्ण भाग यह है कि गुरुकृपा के बिना गुरुप्राप्ति नहीं होती । गुरुकृपा तथा गुरुप्राप्ति हेतु की जानेवाली साधना ही ‘गुरुकृपायोगानुसार साधना’ है ।

गुरुकृपायोगानुसार साधनासम्बन्धी सर्वांगी तथा व्यापक दिशादर्शन प्रस्तुत ग्रन्थमाला में किया गया है । – **संकलनकर्ता**

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी की उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियों ने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओं में भविष्य लिख रखा है । इन जीवनाडी-पट्टिकाओं के वाचन के माध्यम से महर्षि सनातन संस्था का मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका' के वाचन के माध्यम से सप्तर्षि की आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी को 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहले के लेखन में अथवा अब भी साधकों द्वारा दिए लेखन में उन्होंने 'प.पू.' अथवा 'परात्पर गुरु' की उपाधियों से सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की उत्तराधिकारिणियों की उपाधि सम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी को 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है ।

आदर्श शिष्य कैसे बनें ?

'शिष्य' वह है जो गुरु के मन की बात जानकर तदनुसार आचरण करता है ! शिष्य बनेंगे, तो ही गुरुकृपा होकर ईश्वरप्राप्ति होती है । शिष्य के गुण, आचरण, भाव आदि सम्बन्धी साधकों के लिए मार्गदर्शक ग्रन्थ !